साहित्य अकादमी द्वारा श्रीलाल शुक्ला जन्म शताब्दी पर सैमीनार आयोजित

नई दिल्ली, 29 अगस्त (मिसरदीप भाटिया): साहित्य अकादमी ने प्रसिद्ध हिन्दी कहानीकार श्री लाल शुक्ला की जन्म शताब्दी पर एक सैमीनार का आयोजन किया गया। सैमीनार के शुरू में साहित्य अकादमी द्वारा निर्मित व शीत ऋतु द्वारा निर्देशित श्री लाल शुक्ला पर एक दस्तावेजी फिल्म दिखाई गई। साहित्य अकादमी के प्रधान माधव कौशिक ने कहा कि श्री लाल शुक्ला के नावल अपने समय से आगे की रचनएं हैं जिनको विस्व स्त पर देखने की ज़रूरत है।

सैमीनार दौरान जुड़े लेखक व विद्वान।

उन्होंने साहित्य को रचना करते हुए व्यंग्य शैली को अपनाया। साहित्य अकादमी के सचिव डा. के. श्रीनिवास राव ने कहा कि श्री लाल शुक्ला का साहित्य हमें समाज की वास्तविकता से अवगत करवाता है और व्यंग्य द्वारा सुधार हेतु प्रेरित करता है। अपने उद्घाटनी भाषण में गोबिन्द मिश्रा ने श्री लाल शुक्ला से जुड़ी कुछ यादें सुनाते हुए कहा कि वह मूल रूप में एक नावलकार थे। अपने मुख्य भाषण में रामेस्वर राय ने कहा कि आलोचना के औजार श्री लाल शुक्ला की लेखनी की गहराई को मापने हेतु कम हैं।

हम उनके नावलों से आजादी के पश्चात के भारत की भयानक स्थिति को समझ सकते हैं। श्री लाल की बेटी विनीता माथुर ने अपने पिता की कई यादें सांझी कीं। उसने कहा कि हमारे पूरे परिवार को पापा जी से नम्रता, सादगी व उदारता के गुण मिले हैं।

साहित्य अकादमी की उपप्रधान कुसुम शर्मा ने कहा कि श्री शुक्ला के व्यंग्य को एक हथियार के रूप में प्रयोग किया और सर्वे के पश्चात भारत की राजनीतिक व सामाजिक स्थितियों को सभी के समक्ष रखा। सैशन की अध्यक्षता करते हुए ममता कालिया ने कहा कि श्री लाल शुक्ला एक बहुत बढ़िया व्यक्ति व लेखक ते। उनके शब्द मज़ाकिया थे। इस अवसर पर शैलेन्द्र सागर व अखिलेश ने भी श्री लाल शुक्ला बारे अपने विचार पेश किए।

श्री लाल शुक्ला के नावलों पर केन्द्रित सत्र प्रधानगी करते हुए नित्यानंद तिवाड़ी ने कहा कि राग दरबारी की पूरी संरचना व्यंग्य है। श्री लाल शुक्ला के नावलों बारे विनोद तिवाड़ी व प्रेम जनेजा ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। इसके अतिरिक्त रेखा अवस्थी, सुभाष चन्द्र व राजकुमार गौतम ने भी श्री लाल शुक्ला की शख्सियत व रचना बारे अपने विचार सांझे किए।

सैमीनार का संचालन अकादमी के डिप्टी सचिव देवेन्द्र कुमार, देवेश द्वारा किया गया। कार्यक्रम में शुक्ला जी के पारिवारिक सदस्यों सहित भारी संख्या में लेखक, साहित्य प्रेमी व विद्यार्थी उपस्थित थे।